बिस्मिल्लाह-हिर-रहमानिर-रहीम

बुरी रूहें

इंजील : मुहाफ़िज़ 5:1-20

ईसा(अ.स) और उनके शागिर्द झील को पार कर के उस किनारे पर पहुंचे जहाँ गरासानेस नाम की क़ौम रहती थी। ये लोग इब्राहीम(अ.स) की औलादों में से नहीं थे।(1) जब ईसा(अ.स) नाव से उतरे तो पास की एक गुफ़ा से एक आदमी निकल कर उनकी तरफ़ दौड़ा। उस गुफ़ा में मुर्दा लोगों को दफ़नाया जाता था। उस आदमी पर बुरी रूहों का क़ब्ज़ा था।(2) उस आदमी को ज़ंजीर से भी बांधना नामुमकिन था।(3) कई बार लोगों ने उस आदमी के हाथ और पैर ज़ंजीर से बाँधने की कोशिश करी लेकिन वो उसको तोड़ देता था। कोई भी इतना ताक़तवर नहीं था के वो उस आदमी को काबू में कर सकें।(4) रात दिन वो आदमी उन गुफ़ाओं और पहाड़ियों पर भटकता रहता था। वो अपने आपको पत्थर से चोट मार कर ज़ख़्मी कर लेता था और चीख़ता-चिल्लाता फिरता था।(5)

उस आदमी ने ईसा(अ.स) को बहुत दूर से ही आता देख लिया था। वो उनके पास दौड़ता हुआ आया और उनके क़दमों में गिर गया।(6) ईसा(अ.स) ने उससे कहा, “ए बुरी रूह इस आदमी के जिस्म से बाहर निकल।” लेकिन वो आदमी चीख़ कर बोला, “आपको मुझ से क्या चाहिए, ए अल्लाह रब्बुल अज़ीम के चुने हुए मसीहा? मैं आपसे भीख मांगता हूँ के आप मुझे सज़ा मत दीजिए!”(7-8)

ईसा(अ.स) ने उस आदमी से पूछा, “तुम्हारा नाम क्या है?” उस आदमी ने जवाब दिया, “मेरा नाम फ़ौज है क्यूंकि मेरे अंदर बहुत सारी रूहें हैं।”(9) उस आदमी ने ईसा(अ.स) से बार-बार यही ख़ुशामद करी के वो रूहों को इस जगह से ना भगाएं।(10) सुवरों का एक बड़ा झुंड वहीं पास के एक पहाड़ पर चर रहा था।(11) उन बुरी रूहों ने ईसा(अ.स) से भीख मांगी की हमें जानवरों पर चला जाने दीजिए।”(12) ईसा(अ.स) ने उनको आदमी के जिस्म से निकल कर सुवरों पर जाने की इजाज़त दे दी। उन बुरी रूहों ने उस आदमी को छोड़ दिया और सुवरों पर सवार हो गईं। तब उन सुवरों का झुंड पहाड़ से बड़ी तेज़ी से नीचे उतरा और झील में कूद कर डूब गया। उस झुंड में लगभग दो हज़ार सुवर थे।(13)

जो चरवाहा उन जानवरों की देखभाल करता था वो ये सब देख कर वहां से भाग गया और अपने गाँव जा कर सबको इसके बारे में बताया। तो सब लोग ये देखने के लिए अपने घरों से निकल पड़े।(14) जब वो लोग ईसा(अ.स) के पास पहुंचे तो उन्होंने उस आदमी को अपने पूरे होश और हवास में वहीं बैठा देखा। ये वही आदमी था जिस पर बहुत सारी बुरी रूहें सवार थीं। लोग ये देख कर घबरा गए के वो आदमी पूरे होश में और सही सलामत बैठा हुआ था।(15) वहां पर कुछ लोग ऐसे भी थे जिन्होंने ये सब अपनी आँखों से देखा था। उन लोगों ने बाक़ी सबको बताया के उस आदमी के ऊपर सवार बुरी रूहों के साथ क्या हुआ। उन्होंने जानवरों के साथ हुए हादसे के बारे में भी बताया।(16) तब वहां मौजूद लोगों ने ईसा(अ.स) से उस जगह से चले जाने की भीख मांगने लगे।(17) जब ईसा(अ.स) वापस आने के लिए अपनी नाव पर सवार हो रहे थे तो वो आदमी जिसको उन्होंने बुरी रूहों से निजात दिलाई थी, उनके साथ चलने की ख़ुशामद करने लगा।(18)

ईसा(अ.स) ने उसको साथ चलने की इजाज़त नहीं दी। उन्होंने कहा, “अपनी बीवी-बच्चों और अपने दोस्तों के पास वापस जाओ। लोगों से बताओ के अल्लाह रब्बुल करीम ने तुम पर कितना करम किया है। उसने तुम्हारे ऊपर रहम किया है।”(19) तब वो आदमी अपने घर वापस चला गया और ये दास्तान अपने आस-पास के दस क़स्बों में सबको बताई। उसने सबको बताया के ईसा(अ.स) ने उसके लिए कितना अज़ीम काम किया है। सारे लोग ये सुन कर बहुत हैरत में पड़ गए।(20)